



“नौकरीपेशा माता-पिता एवं संतान के संबंध का अध्ययन”

डॉ (श्रीमती) अवंतिका कौशिल

सहायक प्राध्यापक मनोविज्ञान

शासकीय ई. वि. स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोरबा छत्तीसगढ़

संक्षेपिका

उद्देश्य:- प्रस्तुत शोध का उद्देश्य नौकरीपेशा माता-पिता तथा एकल नौकरीपेशा माता-पिता के अभिभावक बालक संबंध का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

उपकल्पना :- एकल नौकरीपेशा एवं दोनों नौकरीपेशा माता-पिता के अभिभावक बालक संबंध में कोई अंतर नहीं होता है।

प्रतिदर्श :- 50 एकल नौकरी पेशा अभिभावक एवं 50 दोनों नौकरीपेशा अभिभावक का चयन बालको नगर कोरबा में किया जिनके बच्चे डी.पी.एस बालकों एवं शा. स्कूल बालको नगर में अध्ययनरत थे।

उपकरण- अभिभावक बालक संबंध मापनी (PCRS)- नलिनी राँव

सांख्यिकीय विश्लेषण - "t" test का उपयोग किया।

परिणाम :- दोनों नौकरी पेशा अभिभावक एवं एकल नौकरीपेशा अभिभावक के अभिभावक-बालक संबंधों में कोई अंतर नहीं मिला।

Keywords - एकल नौकरीपेशा, दोनों नौकरीपेशा, अभिभावक बालक संबंध।

प्रस्तावना:- अभिभावक बालक संबंध ऐसा अनोखा संबंध है जो बच्चे के यह विकास की नींव है। अभिभावक और बालक के बीच का यह अद्वितीय संबंध, माता-पिता और बच्चे के बीच प्रगाढ़ संबंध, अद्वितीय व्यवहार एवं अनोखे प्यार को बताता है। अभिभावक बालक संबंध एक संवेगात्मक संबंध है जिसपर बदलते समय की छाप पड़ती जा रही है और यह बहुत ही संवेदनशील संबंध माता-पिता के नौकरीपेशा होने से अपने मूल रूप जिसमें अभिभावकों का पूर्ण ध्यान, आपस की समझदारी से दूर होता जा रहा है। यूं तो अभिभावक- बालक

संबंध का कोई एक निश्चित रूप या नियम नहीं है तथापि हर माता-पिता का अपनी संतान के साथ उसका रिश्ता अनोखा ही रहता है जिसका उद्देश्य संतान का उचित पोषण और विकास, उसकी उन्नति सफलता और खुशी ही रहता है। प्रत्येक माता-पिता का अपने संतान के साथ एक विशेष प्रकार का ही संबंध होता है।

अभिभावक बालक संबंध के प्रकार :-

1. सुरक्षित संबंध -

अभिभावक बालक संबंध का यह सबसे अटूट प्रकार है, ऐसे संबंध वाली संतान की अपनी माता-पिता से भरपूर अपेक्षा रहती है उन्हें विश्वास होता है कि उन्हें हर परिस्थिति में अपने माता-पिता का सहयोग मिलेगा।

2. मिश्रित संबंध -

अभिभावक बालकों के बीच का ऐसा संबंध जिसमें माता-पिता बच्चों की हर बात नहीं मानते, बच्चे दुविधा में रहते हैं कि उन्हें माता-पिता का समर्थन हर बार मिलेगा या नहीं! बच्चे सुरक्षा की भावना की तलाश में रहते हैं।

3. परिहार रिश्ता-

लगाव की इस श्रेणी में बच्चे सीख लेते हैं कि उन्हें हर बार माता-पिता पर निर्भर नहीं रहना है स्वयं भी आत्मनिर्भर बनना है।

4. अव्यवस्थित रिश्ता-

इस श्रेणी के बच्चों को यह ज्ञात नहीं रहता कि उन्हें अपने माता-पिता से क्या उम्मीद रखनी चाहिए। उपर्युक्त अभिभावक बालक संबंधों से ज्ञात होता है कि अभिभावक बालक संबंध, बालक के व्यक्तित्व के रचयिता होते हैं। माता-पिता का प्रभाव बच्चे के जीवन में बाल्यावस्था से लेकर जीवन पर्यन्त होता है, जिससे उनमें परिपक्वता आती है। माता-पिता बच्चे को अपनी भावनाओं को व्यक्त करना, दूसरों की भावनाओं को समझना, सुनना, साझा करना सिखाते हैं।

Jeffries (2012) के अनुसार जो माता पिता अपने बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं उनमें शक्तिशाली सामाजिक कौशल, एवं स्कूल के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है।HO एवं willions (1996) ने अभिभावक - संतान के संबंध को परिवार की प्रगति का आधार बताया है।

O' Donoghue and Robb (1996) ने स्कूल का चयन इत्यादि में अभिभावकों की महत्वपूर्ण भूमिका बतायी है।

Berthelsen & Sue walker (2008) ने अभिभावक एवं संतान के संबंधों में माता-पिता का संतान के साथ वार्तालाप और वह भी स्कूल एवं होमवर्क को लेकर हुआ वार्तालाप, महत्वपूर्ण बताया है।

माता-पिता की भूमिका-

बच्चों की सहायता उनकी पढ़ाई में, आत्मविश्वास से गृहकार्य करने में, घर के अंदर घर के बाहर उनकी गतिविधियों पर नजर रखने की भी होती है। wagas Rafiq et. al. 2013 ने माता-पिता एवं संतान के बीच धनात्मक रिश्ते को संतान की शैक्षिक प्रगति का धनात्मक आधार बताया है।

Epstein (1995) ने अभिभावक-संतान एवं स्कूल तथा शिक्षकों के बीच संबंधों को संतान के बहुमुखी विकास का आधार बताया है

Grolneck, friendly and Belle (2003) के अनुसार माता पिता का प्रोत्साहन संतान से शिक्षा एवं प्रतियोगिता में सफल होने के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है , जिससे उनकी सफलता सुनिश्चित होती है।

Furguson (2007) के अनुसार माता-पिता घर में बच्चों के लिए होमवर्क करने, टेलीविजन देखने एवं अन्य क्रियाओं के लिए निश्चित नियम बनाकर रखते हैं। उन्हें विभिन्न कौशलों एवं क्रियाओं में निपुण होने लिए प्रोत्साहित करते हैं जिससे उनकी प्रतिभा निखरती है इनका विशेष गुण प्रकट होता है।

Bill, Demo & wedman, 1998; Greenwood & Hickman, 1991) के अनुसार जो माता-पिता अपनी संतान के सकारात्मक परिणाम हेतु उन्हें उच्च अभिप्रेरणा देते हैं, उनकी स्कूल उपस्थिति पर ध्यान देते हैं। उनकी संतान आंतरिक अभिप्रेरणा से समस्या समाधान सीखकर उच्च लक्ष्य की प्राप्त करती है इसके विपरीत जो अभिभावक अपने संतान की शैक्षिक उपलब्धि पर पुरस्कार अथवा दण्ड देना नियंत्रित करते हैं अथवा नकारात्मक विचार अथवा क्रोध प्रकट करते हैं। वे अपनी संतान में आंतरिक अभिप्रेरणा को विकसित होने से रोकते हैं। (Gottfried, Fleming & Giott fried & 1994).

Greenwood & Hickman (1991) Balli. Demo & wedman (1998) के अनुसार जिन बच्चों को माता-पिता की संपूर्ण देखभाल मिलती है वे सहयोगात्मक व्यवहार वाले होते हैं, उनमें असफलता की गुंजाइश कम मिलती है।

Mord, Brimhall & west (1997) के अध्ययन बताते हैं जिन माता-पिता का अपनी संतान की शैक्षिक गतिविधियों पर सहभागिता होती है उनका परीक्षा परिणाम उत्तम होता है।

Umit Tokae & Ercan KocayDruk (2012) के अनुसार जो माता-पिता अपनी संतान से कम जुड़े होते हैं, उनकी शैक्षिक गतिविधियों में ध्यान नहीं देते। ऐसे बच्चों में शैक्षिक एवं व्यावहारिक समस्याएं उत्पन्न हो जाती है।

Dr. Joyce Epstein ने पेरेंटिंग के 6 प्रकार बताए हैं जिनमें Paranting, Communicating, volunteering. Learning at home, decision making, collaborating with the community शामिल हैं।

उपर्युक्त सभी प्रकार वर्तमान शोध द्वारा प्रमाणित हैं। वास्तव में अभिभावक अपनी संतान का प्रथम गुरु है, जो अपनी संतान को जीवन रूपी पाठशाला में जीने के समस्त अध्यायों को क्रमशः सिखाते हैं संतान को शारीरिक रूप से सबल बनाते हैं, मानसिक रूप से सबल बनाने हेतु आत्मविश्वास, समस्या समाधान, सहयोग सिखाते हैं, यही गुण सामाजिक जीवन में भी सफल बनाते हैं।

इस प्रकार माता-पिता संतान के विकास हेतु वह वटवृक्ष है जिसकी छाया में संतान अपनी बहुमुखी प्रतिभा के साथ पुष्पित एवं पल्लवित होता है, इसके विपरीत यदि संतान को माता-पिता रूपी यह वटवृक्ष नहीं मिलता तो उनका विकास प्रभावित होता है।

प्रस्तुत अध्ययन नौकरीपेशा माता-पिता एवं संतान के बीच संबंध का है। एकल नौकरीपेशा अथवा दोनों नौकरीपेशा माता-पिता का अपनी संतान के साथ संबंध कैसा होता है, क्या दोनों की परवरिश में अंतर होता है।

अध्ययन का उद्देश्य -

माता-पिता का संतान के साथ संबंध एक बच्चे की ही विकास की कहानी नहीं लिखता इससे हमारा समाज हमारी राष्ट्र की प्रगति भी. प्रभावित होती है। एक उन्नत, खुशहाल युवा राष्ट्र की तकदीर होता है इसके विपरीत एक भटकता, दिशाहीन युवा राष्ट्र एवं समाज के लिए अभिशाप है।

वर्तमान समय में माता-पिता दोनों का नौकरीपेशा होना, अभिभावक-बालक संबंध को प्रभावित कर रहा है। माता-पिता के पास अपनी संतान के लिए समय नहीं होता। जबकि बालक के संपूर्ण विकास का आधार उसके अभिभावक से स्नेहपूर्ण संबंध है। आवश्यकता है कि इसे महत्वपूर्ण समझ कर इस दिशा में कार्य किया जाए।

उपकल्पना:-

HO₁- एकल नौकरीपेशा एवं दोनों नौकरीपेशा अभिभावक बालक संबंध में कोई अंतर नहीं होता है।

HO₂- माता पिता दोनों नौकरीपेशा एवं एकल नौकरीपेशा पिता के अभिभावक बालक संबंध में कोई अंतर नहीं होता है।

HO₃- माता एवं पिता दोनों नौकरीपेशा एवं एकल नौकरी पेशा माता के अभिभावक बालक संबंध में कोई अंतर नहीं होता है।

विधि- सर्वे विधि

प्रतिदर्श - कोरबा जिले के बालको प्लांट में स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल एवं सरकारी स्कूल में अध्ययनरत छात्र/छात्राएँ जिनके माता-पिता बालको प्लांट में कार्यरत हैं।

सारिणी 01

दोनों नौकरीपेशा अभिभावक (A) एवं एकल नौकरीपेशा अभिभावक (B) का मध्यमान,SD, t

	N	M	SD	t	Significance
A	100	249.19	27.14	4.21	.01
B	100	264.55	24.18		Significant

सारिणी 02

एकल नौकरीपेशा अभिभावक (पिता) एवं दोनों नौकरीपेशा अभिभावक का मध्यमान,SD, t

	N	M	SD	t	Significance
A	50	252.60	24.08	4.02	.05
B	50	272.82	26.12		Significant

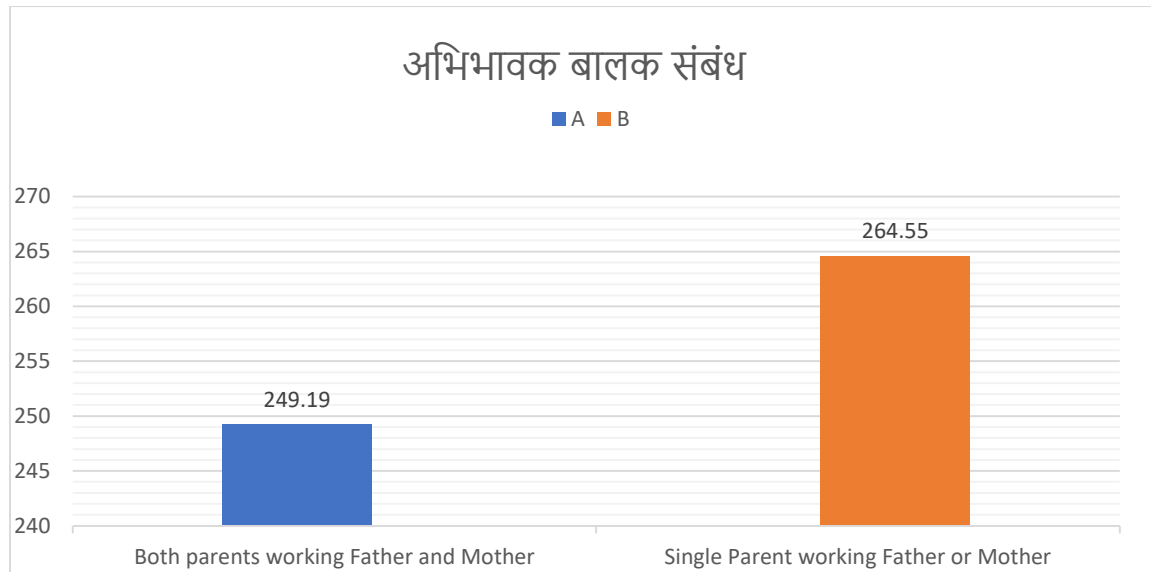
सारिणी 03

एकल नौकरीपेशा अभिभावक (माता) एवं दोनों नौकरीपेशा अभिभावक का मध्यमान,SD, t

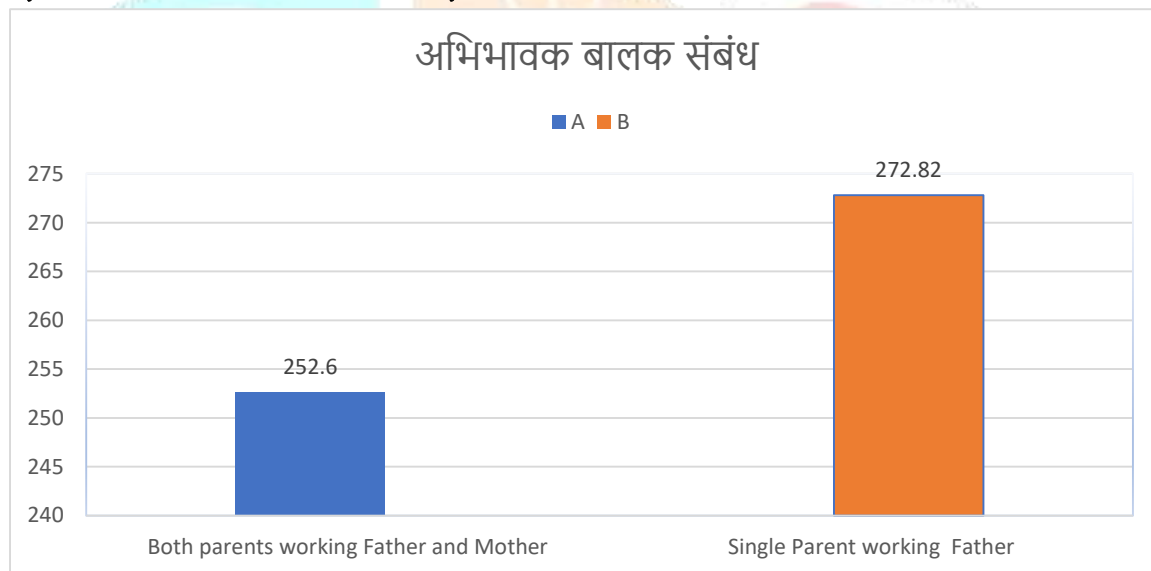
	N	M	SD	t	Significance
A	50	245.78	29.88	1.99	.05
B	50	256.28	22.07		Significant

GRAPH-01

एकल नौकरीपेशा एवं दोनों नौकरीपेशा अभिभावक बालक संबंध

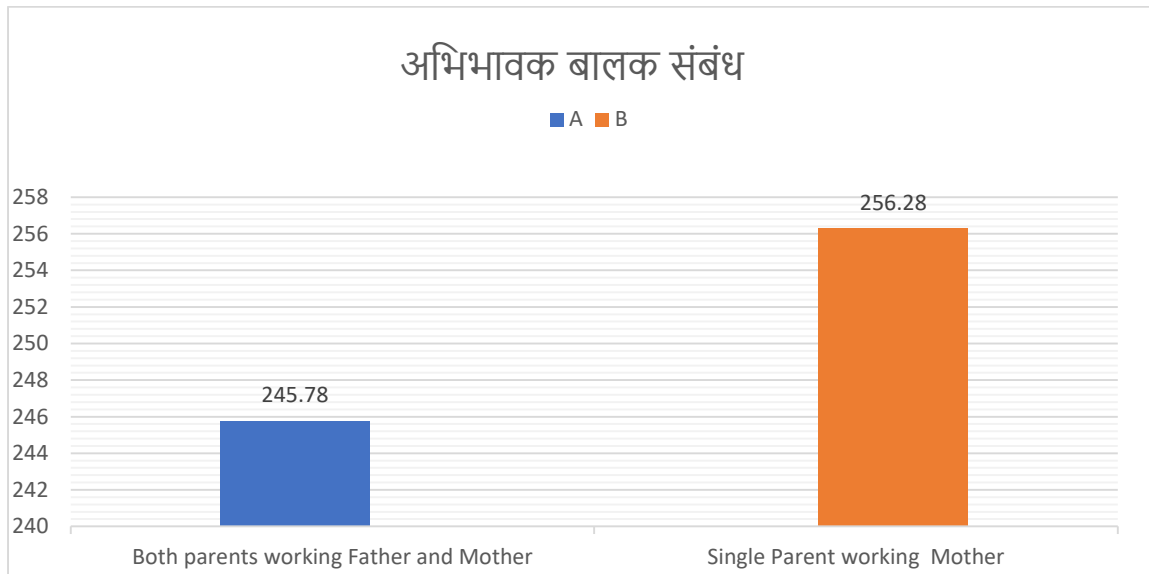
**GRAPH-02**

एकल नौकरीपेशा (पिता) एवं दोनों नौकरीपेशा अभिभावक बालक संबंध



GRAPH-03

एकल नौकरीपेशा (माता) एवं दोनों नौकरीपेशा अभिभावक बालक संबंध

**परिणाम एवं विवेचना –**

- एकल नौकरीपेशा एवं दोनों नौकरीपेशा अभिभावक बालक संबंध में कोई अंतर नहीं होता है।
- माता एवं पिता दोनों नौकरीपेशा एवं एकल नौकरीपेशा पिता के अभिभावक बालक संबंध में कोई अंतर नहीं होता है।
- माता एवं पिता दोनों नौकरीपेशा एवं एकल नौकरी पेशा माता के अभिभावक बालक संबंध में कोई अंतर नहीं होता है।
- माता पिता के अभिभावक बालक संबंध में कोई अंतर नहीं होने के समर्थन में कई अध्ययन हैं:

Amato, P. R. (2013) - इस अध्ययन में पाया गया कि एकल माता-पिता और दोनों नौकरीपेशा माता-पिता के बच्चों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

Hill, H. D. (2015)- इस अध्ययन में पाया गया कि नौकरीपेशा माता-पिता और एकल माता-पिता के बच्चों के बीच संबंध में कोई अंतर नहीं है।

Waldfoegel, J. (2018) - इस अध्ययन में पाया गया कि एकल माता-पिता और दोनों नौकरीपेशा माता-पिता के बच्चों के बीच शैक्षिक प्रदर्शन में कोई अंतर नहीं है।

इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि एकल नौकरीपेशा माता पिता और दोनों नौकरीपेशा माता पिता के अभिभावक बालक संबंध में कोई अंतर नहीं होता है।

REFERENCE-

Amato, P. R. (2013). The consequences of divorce for adults and children. *Journal of Marriage and Family*, 75(5), 1269-1287.

Corwyn, R. F. & Bradley, R. F. (2003). Family process indicators of the relationship between SES and child outcomes. Unpublished manuscript, University of Arkansas of Little Rock.

Davis-Kean, P. E. (2005). The influence of parent education and family income on child achievement: The indirect role of parental expectations and the home environment, *Journal of family, Psychology*, 19 (2), 294-304.

Davis-Kean, P. E. Malanchuk, O., Peck, S. C. & Eccles, J. S. (2003). Parental influence on academic outcomes: do race and education matter? Paper presented at the society for Research.

Deo, P. & Mohan, A. (1985). Deo-Mohan Achievement Motivation Scale (Ach). Agra: National Psychological Corporation.

Furstenberg, F. F., Cook, T. D. Ecdes, J., Elder, G. H. & Sameroff, A. (1999). *Managing to take it: Urban families and adolescent success* (Chicago, University of Chicago Press).

Gottfried, A. E. (1991). Maternal employment in the family setting: Developmental and the environmental issues, In J. V. Lerner & N. L. Galabos (Eds.), *Employed mother and their children* (63-84), New York: Garland.

Grolnick, W. S. & Slowiaczek, M. L. (1994). Parent's involvement in Children's Schooling: A multidimensional conceptualization and motivational model. *Child Development*, 65, 237- 252.

Gyles, R. (1990). Learning mathematics: A qualitative inquiry on parental involvement as reported by urban poor black parents and their fourth-grade children. Doctoral dissertation, New York University.

Hensley S., & Elizabeth, B. (1982). The influence of selected social variables on the achievement of elementary school children in a Textile Mill Community. A Ph.D. dissertation submitted to the University of North Carolina, Greensboro.

Hill, H. D. (2015). The effects of parental employment on children's outcomes. *Journal of Marriage and Family*, 77(2)338-353

Jansari, A & Prajapati, M. (2014). *Inference Statistics-I*, Akshar Publication, Ahmedabad.

Jansari, A & Prajapati, M. (2014). *Inference Statistics-II*, Akshar Publication, Ahmedabad, ISBN: 978-93-85271-07-6.

Jansari, A. (2013). *Psychological Testing and Assessment Includes CD ROM*, Jaipur Vista Publishers. ISBN: 978-81-925667-4-0.

Lynette C. (2017). *Magana with Judith A. Myers-Walls and Dee Love*

<http://www.extension.purdue.edu/providerparent/familychild%20relationship/different typesp-c.htm>. (27/7/2017)

Mahajan Payal and Sharma Neeru (2004). Perceived Parental Relationships and the Awareness Level of Adolescents Regarding Menarche. J. Hum. Ecol., 16(3): 215-218.

Nalini Rao (2008) Manual of Parent-Child Relationship Scale, National Psychological Corporation, Agra, India.

Pnakaj Thakar (2013). Home Environment and Parent-Child Relationship Among Adolescents in Reference to Emotional Maturity, Gujarat University, Ahmedbad.

Waldfofel, J. (2018). The effects of parental work on children's educational attainment. Journal of Labor Economics, 36(2), 257-285.

Wenxin Zhang and Andrew J. Fuligni (2006). Authority, Autonomy, and Family Relationships Among Adolescents in Urban and Rural China. Journal of Research on Adolescence. 16(4), pages 527-537.

